संचार माध्यम

भारतीय जन संचार संस्थान की अर्द्धवार्षिक यूजीसी-केयर सूचीबद्ध शोध पत्रिका

खंड–36, अंक–1

आईएसएसएन : 2321–2608

जनवरी-जून 2024

भारतीय संचार सिद्धांत

भारतीय जन संचार संस्थान
नई दिल्ली

संचार माध्यम

भारतीय जन संचार संस्थान की यूजीसी-केयर सूचीबद्ध शोध पत्रिका

खंड 36 (1) | आईएसएसएन: 2321-2608 | जनवरी-जून 2024

विषय सूची

1. प्राचीन भारतीय संचार सिद्धांत : परंपरा और प्रयोग — 1
   प्रो. कृपाशंकर चौबे

2. संचार-व्याकरण का आधार एकात्म मानव दर्शन — 11
   प्रो. ओमप्रकाश सिंह

3. श्रीहरिवंशपुराण में संचार के विविध आयाम — 15
   नेहा कुमारी

4. मार्कंडेय पुराण में संचार : एक अध्ययन — 21
   पूजा शुक्ला

5. पाणिनि रचित अष्टाध्यायी में भाषा और संचार कला की अवधारणा — 27
   डॉ. उमेश कुमार और डॉ. श्वेता पांडेय

6. वाल्मीकि रामायण में संचार के विविध संदर्भ — 31
   डॉ. लोकनाथ

7. भारतीय संचार परंपरा में आचार्य अभिनवगुप्त के योगदान का अध्ययन — 41
   डॉ. जयप्रकाश सिंह

8. संस्कृत नाटकों में राम के स्वरूप का अध्ययन — 46
   डॉ. श्रुति रंजना मिश्रा

9. गुरु गोबिंद सिंह जी के विद्या दरबार का अध्ययन — 51
   डॉ. नरेश कुमार और डॉ. प्रीति सिंह

10. गोंडी चित्रकला में जनजातीय जीवन का अध्ययन — 60
    मोनिका शर्मा

11. भारतेंदु हरिश्चंद्र की पत्रकारिता में राष्ट्रचेतना का अध्ययन — 66
    पूनम कुमारी और डॉ. अनिल कुमार निगम

12. आधुनिक संचार विशेषज्ञों की दृष्टि में दीनदयाल उपाध्याय का संचार कौशल — 71
    आकाश दीप जरयाल और प्रो. (डॉ.) प्रमोद कुमार

13. भारतीय टेलीविजन : निजीकरण, सांस्कृतिक परिवर्तन, तकनीकी बदलाव और संचार के विकास में कॉमेडी कला का योगदान — 80
    अरुण पटेल

14. पत्रकारों की कार्यशैली पर मोबाइल फोन का प्रभाव — 87
    (उत्तराखंड से प्रकाशित हिंदी समाचार पत्रों के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन)
    सुमित जोशी, डॉ. चेतन भट्ट और डॉ. राकेश चंद्र रयाल

15. डिजिटल संचार माध्यमों के दौर में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा : राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन — 95
    प्रो. सुबोध कुमार और डॉ. आलोक चौहान

संचार माध्यम | खंड 36(1) : 51-59, जनवरी-जून 2024
यूजीसी-केयर सूचीबद्ध शोध पत्रिका, आईएसएसएन: 2321-2608

गुरु गोबिंद सिंह जी के विद्या दरबार का अध्ययन

डॉ. नरेश कुमार[1] और डॉ. प्रीति सिंह[2]

सारांश

दस गुरु परंपरा द्वारा शुरू से ही साहित्यिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा को प्रोत्साहन व संरक्षण प्रदान किया गया। इन गुरुओं का साहित्य के विविध क्षेत्रों में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसमें गुरु गोबिंद सिंह जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे सिक्ख गुरु परंपरा में दसवें गुरु हैं। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। विविध विषयों पर उनकी रचनाओं का साहित्य में अनुपम योगदान है। उनके साथ उनके 52 चिंतकों ने साहित्य को समृद्ध करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन कवियों ने प्रत्येक विषय को आधार बनाकर रचनाएँ कीं। इन्होंने चाणक्य नीति, हितोपदेश और महाभारत के कई पर्वों का भाषानुवाद किया। इसी प्रकार कुछ कवियों ने गुरुजी के जीवन को साहित्य के द्वारा समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का कार्य किया। अधिकतर कवियों की फुटकर रचनाएँ उपलब्ध हैं और कुछ कवियों की रचनाएँ ग्रंथ रूप में उपलब्ध हैं। अणिराय, आलम, अमृतराय, धन्ना, सेनापति जैसे कवियों ने दरबार की शोभा को बढ़ाने का कार्य किया। उनके द्वारा रचित साहित्य आज के समय में गुरु गोबिंद साहिब के जीवन को नई दिशा देने का कार्य कर रहा है। उनकी अधिकतर रचनाएँ गुरु गोबिंद साहिब की युद्ध रणनीतियों और युद्धों का वर्णन करती हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी की दरबार की विरासत न केवल सिख संस्कृति को समृद्ध करती है, अपितु भारत के साहित्य में अपना अनुपम योगदान देती है।

संकेत शब्द : श्री गुरु गोबिंद सिंह, आनंदपुर साहिब, विद्याधर, विद्या दरबार, दरबारी कवि, पाँवटा साहिब

प्रस्तावना

श्री गुरु गोबिंद सिंह अनेक प्रतिभाओं से संपन्न महापुरुष हैं। वे योद्धा, सेनानी और संत होने के साथ-साथ साहित्य रचयिता भी थे। उन्होंने विविध भाषाओं में रचना कर साहित्य को समृद्ध करने का कार्य किया। उनकी साहित्यिक विरासत अत्यधिक समृद्ध थी तथा कला-साहित्य के लिए भी उनका अगाध प्रेम था। उनके साहित्य को अधिक समृद्ध बनाने के लिए उनके दरबारी कवियों का महत्त्वपूर्ण प्रदेय रहा है। उनके दरबार में 52 कवि थे, जो बहुमुखी प्रतिभा संपन्न कवि थे। विविध विषयों को आधार बनाकर इन बावन कवियों ने साहित्य सृजन कर विद्या दरबार को और अधिक समृद्ध किया। इन कवियों ने गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबार में रहकर उनके जीवन को अपनी रचनाओं के माध्यम से उजागर करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इन कवियों की रचनाओं में गुरु गोबिंद सिंह के संपूर्ण जीवनवृत्त के साथ उनकी वीरता और युद्धों का सहज और सजीव चित्रण प्राप्त होता है। उन्होंने पंजाबी, फारसी और ब्रज भाषाओं में साहित्य की रचना की और अपने साहित्य को जनमानस तक पहुँचाने का अतुलनीय कार्य किया।

शोध प्रविधि एवं शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबारी कवियों के जीवन और रचनाओं का अध्ययन करना है। आज भी श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के विद्या दरबार और उनके दरबारी कवियों की पर्याप्त जानकारी एक साथ उपलब्ध नहीं है। उनकी रचनाओं के माध्यम से ही उनके दशम गुरु के दरबार में होने का अनुमान लगाया जा सकता है। ये दरबारी कवि विविध भाषाओं के ज्ञाता थे, जिस कारण इन कवियों की रचनाओं में भाषाई विविधता परिलक्षित होती है। इनकी कुछ रचनाएँ फुटकर रूप में तो कई रचनाएँ ग्रंथ रूप में उपलब्ध हैं। इन रचनाओं का मूलाधार गुरु गोबिंद सिंह जी का जीवन दर्शन, युद्ध और वीरता का वर्णन था। साथ ही तत्कालीन समाज की अनेक स्थितियों का चित्रण भी इन कवियों की रचनाओं में प्राप्त होता है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने आनंदपुर में रहकर अपने 'विद्या दरबार' की स्थापना की, जहाँ कवियों ने अनेक विषयों में अपनी रचनाएँ कीं। उनकी रचनाओं का संकलन कर उस ग्रंथ को 'विद्याधर' नाम दिया गया। अधिकतर कवियों की रचनाओं के उपलब्ध न होने के कारण उन्हें बावन कवियों की श्रेणी में रखना एक विवादास्पद विषय है। प्रस्तुत शोध पत्र में इन विवादों का ध्यान रखते हुए कुछ कवियों की रचनाओं को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में व्याख्यात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

साहित्य के क्षेत्र में श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। गुरु तेग बहादुर सिंह जी के बलिदान के पश्चात् नौ वर्ष की आयु में वह दस गुरु परंपरा के दसवें गुरु बनें। उन्होंने समाज कल्याण में अपना सर्वस्व जीवन लगा दिया। 'गुरु गोबिंद सिंह जी का नाम लेते ही आज का भारतीय एक अपूर्व गौरव और उल्लास का अनुभव करने लगता है। 'वीर' शब्द के अंदर जितनी भी गरिमा, परंपरा-क्रम से हमारे चित्त में संचित है वह सब साकार हो उठती है। पवित्र चरित्र, अडिग उत्साह, अकुंठ, साहस, अकृत्रिम, सौंदर्य, विद्या और तपस्या का नियत संरक्षण और मनोबल का आश्रय भंडार ही 'वीर' है। गुरु गोबिंद सिंह इन सब गुणों के मूर्तिमान हैं' (द्विवेदी, 2021, पृष्ठ 58)। गुरु गोबिंद सिंह जी का जन्म 22 दिसंबर, 1666 को बिहार के पटना शहर में हुआ था। इस भूमि का इतिहास त्याग, समर्पण और साहस से भरा है। उन्होंने अपनी रचना 'विचित्र नाटक' (बचित्तर नाटक) में अपने जन्म स्थान का वर्णन करते हुए लिखा है :

'मुर पित पूरब कियसी पयाना।
भाँति भाँति के तीरथ नाना।

[1]सहायक प्राध्यापक, पंजाबी एवं डोगरी विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, ईमेल : nareshaman2002@hpcu.ac.in
[2]सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश : ईमेल : drpreetisingh10001@gmail.com